आइ.टी.मिनिस्टर रवि शंकर जी की स्पीच

श्रद्धेय महामहिम उपराष्ट्रपति वैंकया नायडू जी, श्रद्धामना आशा दीदीजी, पोस्टल विभाग के सचिव श्री बिशोई एवं अन्य पदाधिकारीगण, कार्तिकेयन एवं सभी गुणी देवियों और सज्जनों! ये कार्यक्रम पोस्टल विभाग के प्रयास से हो रहा है और महामहिम उपराष्ट्रपति जी ने कृपापूर्वक अनुमति दी है कि देश की एक महान साधिका दादी जानकी जी के सम्मान में Postal Stamp का आज Dedication हो रहा है, तो मैं विभाग के मंत्री के रूप में आप सबों का बड़ा स्वागत करता हूँ। और बहुत ही अभिनन्दन करता हूँ। भारत की धरा संस्कृति की है, संस्कार की है, संतों की है, आध्यात्म की है। भारत को अगर में अपने दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करता हूँ, तो तीन सिद्धान्त मुझे हमेशा दिखाई पड़ते हैं। एक तो ऋगवेद की ऋचा है – एकम् सत्य विप्रा बहुधा वदन्ति। सत्य एक है विद्वान विभिन्न प्रकार से उसकी व्याख्या करते हैं। truth is one, wise man interpreted differently, you have no perception of truth, that I have my own, you follow your own path, I follow my own. You respect my path, I respect your. Because in the ultimate analysis your path and my path merges in the same destination. Where in lies the ultimate truth. Permanent, eternal, indivisible, undividable, शास्वत सत्य, स्थाई, परम–चिरंतन, ये रही है भारत की सोच। और दूसरी है वसुधैव कुटुम्बकम्, ये पूरा विश्व तो अपना है, हमें किसी को आगे–पीछे नहीं देखना है। पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखना है। और तीसरा सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। अगर पूरा विश्व एक परिवार है तो सभी सन्तुष्ट हों, सभी खुश हों, ये संस्कार तो हैं लेकिन इसे जमीन पर उतारने के लिए ईश्वर ही माध्यम बनाता है। और दादी जानकी जी, मैं बहुत विनम्रता से कहूँगा, ईश्वर के द्वारा वही माध्यम थीं, जो पूरी दुनिया में भारत के शास्वत सिद्धान्त का विस्तार से परिचय दे रही थीं। अभी श्रद्धामना आशा दीदी उनके बारे में बता रही थीं, मैं पढ़ रहा था। 1974 में इग्लैंड जाना, अंग्रेजी में बहुत प्रवीण नहीं होना, फिर भी अंदर से लगन है कि हमें इस राजयोग के महान आन्दोलन को व्यक्ति निर्माण में ले चलना है। जहाँ व्यक्ति में नकारात्मकता नहीं हो, Negativism नहीं हो, जहाँ व्यक्ति आत्म–विश्वास से कुछ बड़ा सोचे, और अपना ही नहीं दूसरे की सोचे, सद्भाव बनाए। ये ही तो उनके पूरे चिन्तन का सार था। और सरलता से उन्होंने भारत के दर्शन को, जिस तरह से पूरी दुनिया में रखा, ये बहुत बड़ी बात है। आशा दीदी मैं आपको बताऊँ दादी जी से जो मेरा पहला साक्षात्कार हुआ था, हम लोग लोक नायक जय प्रकाश के सिपाही थे, उनके आन्दोलन के, और जब उनका 79 में देहावसान हुआ था, तो प्रार्थना सभा में दादी जी भी आई थीं। और हम लोग उस समय Students थे, जे.पी. के साथ बहुत लम्बा उस संघर्ष में रहे, महामहिम उपराष्ट्रपति जी हम लोगों से

काफी वरिष्ठ हैं, उस संघर्ष में उनकी भी एक स्नेहिल सक्रियता रही लेकिन उस समय मैंने दादीजी को पहली बार देखा था। उनकी आभा, उनकी सोच, उनकी प्रार्थना में जो तत्व था, उसने मुझे बहुत आकर्षित किया था। और आज में आपको दूसरी बात ये कहना चाहता हूँ कि एक बार आपके संगठन ने मुझे एक कार्यक्रम में बुलाया था, माननीय वैकया जी! जो पूरे गुड़गाँव में आइ.टी प्रोफेसनल हैं, इसका उन्होंने तीन दिन का एक बहुत बड़िया कैम्प कराया था – आध्यात्म की ओर – और कहा कि आप आइ.टी. मंत्री हैं, आइए आप इनको संबोधित करिए। आइ.टी के प्रोफसनल्स को तो मैंने दुनिया भर में संबोधित किया है, कैलिफोर्निया से लेके, मुम्बई से लेके लण्डन तक, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ के परिवेश में आइ.टी प्रोफेसनल्स और देश का आइ.टी मंत्री उनको संबोधित करे, ये मेरे लिए भी अनुभव था। आपके इन आयोजनों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है आशा जी! और मैं तो हमेशा कहता हूँ कि Gender justice की बात तो हम सभी करते हैं लेकिन Gender justice के आन्दोलन को जमीन पर उतारने का काम जो आपके संगठन ने किया है, ये बहुत ही अभिनन्दनीय है और इसके लिए मैं आपकी बहुत ही प्रसंशा करना चाहता हूँ। आजकल की दुनिया के Materialistic स्वभाव की हम बहुत चर्चा करते हैं कि we have become too materialistic. स्वार्थ से व्यक्ति जकड़ा हुआ है। ऐसे में देश की बहनों को, देश की बेटियों को एक बड़े आध्यात्मिक परिदृश्य का परिचय देते हुए, अपने जीवन को त्यागकर इस बड़े आन्दोलन में लग जाओ। माननीय वैंकया जी आप भी गये हैं माउन्ट आबू, मैं भी गया हूँ, ये 25–30 हजार व्यक्ति किस प्रकार वहाँ पर एक सद्भाव से मिलते हैं, रहते हैं, ये बहुत ही सुखद अनुभव है। आपका ये आन्दोलन बहुत ही सफल हुआ है और दादी जी को इसके लिए हम सभी हृदय से प्रणाम करते हैं, शायद Century ईश्वर अपने ऐसे ही शिष्यों को देता है। She lived for a meaningful life of 104 years. आज Postal विभाग ने उनके नाम पर जो ये टिकट निकाला है तो ये पोस्टल विभाग उनका सम्मान नहीं कर रहा है, हमारा पोस्टल विभाग सम्मानित हो रहा है। हमारे विभाग की ये परम्परा रही है कि हम ऐसे देश के योग्य मनीषियों के सम्मान में टिकट निकालते हैं। आज माननीय उपराष्ट्रपति जी आपको बताते हुए मुझे और प्रसन्नता हो रही है, ये कोरोना फिर से अपने आवेग को दिखा रहा है, इनमें से पूरे कोरोना काल में हमारे पोस्टल विभाग ने जो काम किया है, देश को जोड़ने में, मैं कभी–कभी थोड़ा–सा हँसते हुए कहता हूँ – कोरोना में सड़क बन्द, हवाई जहाज बन्द, रेल बन्द लेकिन देश को एक करने का काम तो मेरे सभी विभाग ने किया चाहे वो आ.टी हो या मोबाइल हो या Communication हो या internet हो या हमारा पोस्टल हो। पोस्टल विभाग ने गाँव–गाँव में डाकिया के माध्यम से आधार Enable Payment पहुँचाया, लगभग 12 हजार करोड़ रूपये पहुँचाये, बीज पहुँचाया, दवा पहुँचाई और हमारे पोस्टल विभाग के लगभग 167 लोग

कोरोना में शहीद हुए काम करते हुए, तो मुझे लगा कि आज का अवसर था कि हमारे पोस्टल विभाग के लोग बड़े ही लॉ प्राफाइल रहते हैं, मैं हमेशा कहता हूँ, ज़रा तुम लोग हाइ प्रोफाइल बनो, देश के लिए बड़ा काम कर रहे हो। इसलिए माननीय उपराष्ट्रपति जी आज के इस अवसर पर मुझे लगा कि मैं उनके इन अच्छे गुणों को भी बताऊँ। एक फैसला माननीय उपराष्ट्रपति जी मैंने और किया है – अगले वर्ष हमारे देश की स्वतंत्रता को 75 Years पूरे होंगे। और मैंने विभाग को निर्देश किया है कि भारत को आजाद करने में बहुत से जनसंग हीरोज़ ने काम किया है जिनकी चर्चा नहीं होती है। बहुत से ऐसे संत, संन्यासी जिन्होंने अपने तरीके से देश को जगाने की कोशिश की। हर बदलाव राजनीति के माध्यम से नहीं होता है। देश तभी आगे बढ़ता है जब देश की सामाजिक शक्ति, देश की राजनीतिक शक्ति, देश की सांस्कृतिक शक्ति और देश की आध्यात्मिक शक्ति सब मिलकर काम करते हैं। तो मैंने अपने विभाग को निर्देश दिया है कि जब भारत की आजादी के 75 years जब अगले साल पूरे होंगे तो आप अपने Vast Network के माध्यम से ऐसी छुपी हुई प्रतिभाओं को खोजें, उनका सम्मान करें, उन पर एक सीरीज़ ऑफ टिकट निकालें, उन पर बच्चों के बीच में कुछ Essay Competition करायें ताकि 75 years के बाद जो नई पीढ़ी आये उसको मालूम हो कि हम जहाँ जिस जमीन पर खड़े हैं, उस जमीन को मजबूत बनाने में बहुत लोगों ने काम किया है। आज के दिन मैं पुनः दादी जानकी को बहुत प्रणाम करता हूँ और मेरी बहुत शुभ कामना है, आपके पूरे आन्दोलन को, ब्रह्माकुमारीज़ इस देश के लिए भारत के लिए और भारत की संस्कृति, संस्कार को, दुनिया के सामने बहुत ही प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर रहा है। आपका ये आन्दोलन सफल हो, मेरी बहुत–बहुत शुभ कामनाएँ। धन्यवाद।